

॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ श्री शिव नमः ॥

श्री द्वादश ज्योतिर्लिंग स्तोत्र

Dwadash Jyotirlinga Stotram — संपूर्ण स्तोत्र पाठ, सरल हिंदी भावार्थ एवं पाठ विधि सहित

रचयिता: आदि शंकराचार्य ✓ निःशुल्क प्रामाणिक PDF

॥ संपूर्ण स्तोत्र पाठ (सरल हिंदी भावार्थ सहित) ॥

श्लोक १

सौराष्ट्रदेशे विशदेऽतिरम्ये ज्योतिर्मयं चन्द्रकलावतंसम्।
भक्तिप्रदानाय कृपावतीर्णं तं सोमनाथं शरणं प्रपद्ये॥ १॥

भावार्थ: सौराष्ट्र (गुजरात) के अत्यंत पवित्र और सुरम्य प्रदेश में जो ज्योतिर्मय रूप में विराजमान हैं, जिनके मस्तक पर बाल-चन्द्रमा मुकुट के समान सुशोभित है, और जो अपने भक्तों को अनन्य भक्ति प्रदान करने के लिए साक्षात् कृपापूर्वक अवतरित हुए हैं — उन देवाधिदेव भगवान श्री सोमनाथ की मैं शरण ग्रहण करता हुँ।

श्लोक २

श्रीशैलशृङ्गे विबुधातिसङ्गे तुलाद्रितुङ्गेऽपि मुदा वसन्तम्।
तमर्जुनं मल्लिकपूर्वमेकं नमामि संसारसमुद्रसेतुम्॥ २॥

भावार्थ: श्रीशैल पर्वत के उस पावन शिखर पर, जहाँ देवताओं और ऋषियों का निरंतर समागम रहता है, जो अत्यंत प्रसन्नतापूर्वक निवास करते हैं और इस घोर संसार-सागर से पार उतारने के लिए सेतु (पुल) के समान हैं — उन अद्वितीय भगवान श्री मल्लिकार्जुन को मैं आदरपूर्वक प्रणाम करता हुँ।

श्लोक ३

अवन्तिकायां विहितावतारं मुक्तिप्रदानाय च सज्जनानाम्।
अकालमृत्योः परिरक्षणार्थं वन्दे महाकालमहासुरेशम्॥ ३॥

भावार्थ: सज्जनों को मोक्ष प्रदान करने और अपने भक्तों की अकाल मृत्यु (असामयिक संकट) से रक्षा करने के लिए जिन्होंने पावन अवन्तिकापुरी (उज्जैन) में अवतार धारण किया है — उन सुरश्रेष्ठ, कालों के काल भगवान श्री महाकालेश्वर की मैं वंदना करता हुँ।

श्लोक ४

कावेरिकानर्मदयोः पवित्रे समागमे सज्जनतारणाय।
सदैव मान्धातृपुरे वसन्तमोङ्कारमीशं शिवमेकमीडे॥ ४॥

भावार्थ: नर्मदा और कावेरी (नर्मदा की पावन जलधारा) के पवित्र संगम पर, साधु-संतों और सज्जनों के उद्धार हेतु जो सदैव मान्धाता नगरी में निवास करते हैं — उन प्रणवरूप, देवाधिदेव भगवान श्री ओंकारेश्वर की मैं स्तुति करता हुँ।

श्लोक ५

पूर्वोत्तरे प्रज्वलिकानिधाने सदा वसन्तं गिरिजासमेतम्।
सुरासुराराधितपादपद्मं श्रीवैद्यनाथं तमहं नमामि॥ ५॥

भावार्थ: पूर्वोत्तर दिशा में चिताभूमि (अथवा प्रज्वलित तेज के पावन धाम) में जो माता पार्वती (गिरिजा) के साथ सदा विराजमान रहते हैं, और जिनके चरण-कमलों की देवता एवं असुर दोनों श्रद्धापूर्वक पूजा करते हैं — उन समस्त रोगों और कष्टों को हरने वाले भगवान श्री वैद्यनाथ को मैं नमन करता हुँ।

श्लोक ६

यं डाकिनीशाकिनिकासमाजैर्निषेव्यमाणं पिशिताशनैश्च।
सदैव भीमादिपदप्रसिद्धं तं शङ्करं भक्तहितं नमामि॥ ६॥

भावार्थ: डाकिनी-शाकिनी तथा समस्त गणों द्वारा जिनकी सेवा-उपासना की जाती है, जो भीमा नदी के तट पर 'भीमशंकर' नाम से प्रसिद्ध हैं और सदा अपने भक्तों के कल्याण में तत्पर रहते हैं — उन कल्याणकारी भगवान श्री भीमशंकर को मेरा सादर प्रणाम है।

श्लोक ७

सुताम्रपर्णीजलराशियोगे निबध्य सेतुं विशिखैरसंख्यैः।
श्रीरामचन्द्रेण समर्पितं तं रामेश्वराख्यं नियतं नमामि॥ ७॥

भावार्थ: ताम्रपर्णी नदी और विशाल समुद्र के पावन संगम पर, असंख्य बाणों व पत्थरों से विशाल सेतु बनाकर मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री रामचंद्र जी ने जिनकी प्रतिष्ठा व पूजा की — उन पापनाशक भगवान श्री रामेश्वरम को मैं नित्य प्रणाम करता हुँ।

श्लोक ८

याम्ये सदङ्गे नगरेऽतिरम्ये विभूषिताङ्गं विविधैश्च भोगैः।
सद्भक्तिमुक्तिप्रदमीशमेकं श्रीनागनाथं शरणं प्रपद्ये॥ ८॥

भावार्थ: दक्षिण दिशा में (अथवा दारुकावन के अत्यंत रमणीय प्रदेश में), जिनका श्रीअंग दिव्य नागों और आभूषणों से सुशोभित है, जो अपने शरणागत को उत्तम भक्ति और मोक्ष दोनों प्रदान करते हैं — उन एकमात्र परमेश्वर भगवान श्री नागेश्वर (नागनाथ) की मैं शरण लेता हुँ।

श्लोक ९

सानन्दमानन्दवने वसन्तमानन्दकन्दं हतपापवृन्दम्।
वाराणसीनाथमनाथनाथं श्रीविश्वनाथं शरणं प्रपद्ये॥ ९॥

भावार्थ: जो पावन आनंदवन (काशी) में परमानंद के साथ निवास करते हैं, जो समस्त आनंद के मूल कंद हैं, भक्तों के समस्त पाप-समूहों का नाश करने वाले हैं, और जो अनाथों के एकमात्र नाथ व वाराणसी के स्वामी हैं — उन देवाधिदेव भगवान श्री काशी विश्वनाथ की मैं शरण ग्रहण करता हुँ।

श्लोक १०

सह्याद्रिशीर्षे विमले वसन्तं गोदावरितीरपवित्रदेशे।
यद्दर्शनात्पातकमाशु नाशं प्रयाति तं त्र्यम्बकमीशमीडे॥ १०॥

भावार्थ: सह्याद्रि पर्वत के निर्मल शिखर पर और पतित-पावनी गोदावरी (गौतमी) नदी के पावन तट पर जो निवास करते हैं, और जिनके मात्र दर्शन से घोर से घोर पाप भी तुरंत नष्ट हो जाते हैं — उन त्रिनेत्रधारी भगवान श्री त्र्यम्बकेश्वर की मैं स्तुति करता हुँ।

श्लोक ११

महाद्रिपार्श्वे च तटे रमन्तं सम्पूज्यमानं सततं मुनीन्द्रैः।
सुरासुरैर्यक्षमहोरगाद्यैः केदारमीशं शिवमेकमीडे॥ ११॥

भावार्थ: विशाल हिमालय (महाद्रि) की सुरम्य गोद में मंदाकिनी तट पर जो आनंदपूर्वक विहार करते हैं, और मुनीश्वरों, देवताओं, असुरों, यक्षों तथा गंधर्वों द्वारा जिनकी निरंतर पूजा की जाती है — उन अलौकिक भगवान श्री केदारनाथ की मैं आराधना करता हुँ।

श्लोक १२

इलापुरे रम्यविशालकेऽस्मिन् समुल्लसन्तं च जगद्वरेण्यम्।
वन्दे महोदारतरस्वभावं घृष्णेश्वराख्यं शरणं प्रपद्ये॥ १२॥

भावार्थ: अतिशय विशाल और सुरम्य इलापुर (वेरुळ/एलोरा) क्षेत्र में जो दिव्य ज्योति के रूप में शोभायमान हैं, जो संपूर्ण जगत के वंदनीय हैं और जिनका स्वभाव परम उदार व कृपालु है — उन भगवान श्री घृष्णेश्वर की मैं वंदना करता हुँ और उनकी शरण में जाता हुँ।

फलश्रुति

द्वादशज्योतिर्लिङ्गस्मरणं सर्वकामप्रदं शुभम्।
एतानि ज्योतिर्लिङ्गानि सायं प्रातः पठेन्नरः।
सप्तजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति॥ १३॥

भावार्थ: भगवान शिव के इन बारह ज्योतिर्लिंगों का स्मरण समस्त मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाला और परम कल्याणकारी है। जो मनुष्य प्रातःकाल और सायंकाल इन बारह ज्योतिर्लिंगों का श्रद्धापूर्वक पाठ अथवा स्मरण करता है, उसके सात जन्मों के संचित पाप भी तुरंत नष्ट हो जाते हैं और वह अंत में शिवलोक को प्राप्त होता है।

🪔 नित्य पाठ विधि एवं नियम

- **शुभ दिन एवं मुहूर्त:** नित्य प्रातः अथवा संध्याकाल में यह पाठ किया जा सकता है। विशेष रूप से सोमवार, प्रदोष व्रत, मासिक शिवरात्रि, श्रावण मास (सावन) तथा महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर इसका पाठ सहस्त्र गुना फलदायी माना गया है।
- **स्थान एवं शुद्धि:** स्नान आदि से निवृत्त होकर स्वच्छ श्वेत अथवा पीले वस्त्र धारण करें। शांत व पवित्र पूजा स्थल पर उत्तर अथवा पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठें।
- **आसन एवं दीप-पूजन:** कुशा अथवा ऊन के स्वच्छ आसन पर बैठें। भगवान शिव की प्रतिमा, शिवलिंग अथवा द्वादश ज्योतिर्लिंग चित्र के समक्ष शुद्ध गाय के घी का दीपक और सुगंधित धूप प्रज्वलित करें।
- **पंचोपचार / षोडशोपचार पूजन:** संभव हो तो शिवलिंग पर जल, गंगाजल, कच्चा दूध, श्वेत चंदन, भस्म, बिल्वपत्र और धतूरा अर्पित करें।
- **पाठ की लय एवं भाव:** स्तोत्र के प्रत्येक श्लोक का उच्चारण अत्यंत शुद्ध, स्पष्ट और लयबद्ध भाव से करें। श्लोक पढ़ते समय संबंधित ज्योतिर्लिंग धाम का मन में ध्यान करते जाएं। पाठ के उपरांत भगवान शिव की आरती करें और 'ॐ नमः शिवाय' महामंत्र का जप करें।

🌸 पाठ के अद्भुत लाभ

- **सात जन्मों के पापों का क्षय:** *'सप्तजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति'* — स्तोत्र की फलश्रुति स्पष्ट घोषणा करती है कि नित्य प्रातः-सायं द्वादश ज्योतिर्लिंगों के स्मरण मात्र से साधक के सात जन्मों के ज्ञात-अज्ञात पाप तत्क्षण विनष्ट हो जाते हैं।
- **अकाल मृत्यु एवं घोर संकटों से अभय-दान:** *'अकालमृत्योः परिरक्षणार्थं वन्दे महाकालमहासुरेशम्'* — महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग की स्तुति साधक को दुर्घटना, असाध्य रोग और अकाल मृत्यु के भय से सर्वथा मुक्त कर दीर्घायु प्रदान करती है।
- **घर बैठे संपूर्ण तीर्थ-दर्शन का पुण्य:** जो श्रद्धालु शारीरिक, आर्थिक या समय की सीमाओं के कारण सभी बारह ज्योतिर्लिंगों की प्रत्यक्ष यात्रा नहीं कर पाते, उन्हें इस स्तोत्र के नित्य पाठ से संपूर्ण द्वादश धामों के प्रत्यक्ष दर्शन का फल प्राप्त होता है।
- **रोग, शोक एवं व्याधियों से मुक्ति:** *'सुरासुराराधितपादपद्मं श्रीवैद्यनाथं तमहं नमामि'* — भगवान वैद्यनाथ के पावन श्लोक का जप शारीरिक कष्टों, असाध्य बीमारियों और मानसिक तनाव का निवारण कर उत्तम आरोग्य प्रदान करता है।
- **संसार-सागर से मुक्ति एवं मोक्ष-प्राप्ति:** *'तमर्जुनं मल्लिकपूर्वमेकं नमामि संसारसमुद्रसेतुम्'* — भगवान मल्लिकार्जुन की कृपा से साधक भवसागर के कष्टों को पार कर अंत में शिव के परम धाम (कैलास) को प्राप्त करता है।